विद्यालय संसाधनों के विकास में विद्यालय प्रमुख की भूमिका - छत्तीसगढ़

एक संदर्भ

National Institute of Educational Planning and Administration (Deemed to be University)

National Centre for School Leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़, रायपुर

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा (आई.ए.एस.)
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

डॉ. योगेश शिवहरे
अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा
उप संचालक
एस. सी. ई. आर. टी. छत्तीसगढ़, रायपुर
एवं
श्री रामहरि सराफ
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोरबा

समन्वयन

श्री डी. दर्शन
नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशीप अकादमी
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

मॉड्यूल लेखन समन्वयन

श्री गौरव शर्मा

लेखिका

श्रीमती आशु गुप्ता - व्याख्याता, डाइट कोरबा

सहयोग

श्री भास्कर गुप्ता,व्याख्याता
शासकीय हाई स्कूल बिरदा, जिला कोरबा

शीर्षक - <u>विद्यालय संसाधनों के विकास में विद्यालय प्रमुख की भूमिका</u>

क्षेत्र - विद्यालय संसाधन का रूपांतरण।

कीवर्ड –मानवीय संसाधन, भौतिक संसाधन।

उद्देश्य :-

(1) विद्यालय में मानवीय संसाधनों एवं भौतिक संसाधनों के प्रति सुरक्षा की भावना के महत्व को परिभाषित कर सकेंगे।

(2) शैक्षिक कार्यक्रम एवं सहगामी क्रियाओं का संचालन प्रभावी ढंग से कर सकेंगे।

(3) विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों के प्रभावी उपयोग हेतु क्रियान्वयन।

(4) प्रभावी शिक्षा व्यवस्था प्राप्त करने के लिए विद्यालय में समस्त स्टाफ एवं छात्रगण जिम्मेदारी के भाव का वर्णन कर सकेंगे।

(5) उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए ज्ञान को आत्मसात कर सृजन करने की तार्किक क्षमता विकसित कर सकेंगे।

भूमिका : -विद्यालय में सफलता उसके भौतिक और मानवीय संसाधनों पर आश्रित होती है यह संसाधन ही विद्यालय में सीखने के अवसरों को प्रदान करती है। बच्चों को जब हम स्वाभाविक रूप से अपने आस पास की दुनिया के अवलोकन के मौके देते हैं तो वह स्वयं ही इस भौतिक दुनिया से संवाद स्थापित कर वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति करते हैं और अवलोकन की इस प्रक्रिया में यदि हम प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संसाधनों के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करें तो छात्र अपने व्यक्तित्व एवं समाज से पूर्ण सामंजस्य

स्थापित कर कुछ नया सृजन कर सकते हैं। जिससे उन के ज्ञान में वृद्धि एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।

स्मिथ एवं फिलिप्स के अनुसार - "भौतिक रूप से संसाधन वातावरण कि वे प्रक्रियाएं हैं जो मानव के उपयोग में आते हैं।"जेम्स फीयर्स के शब्दों में - "संसाधन वह कोई भी वस्तु है जो मानवीय आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति करती है।"

विद्यालय प्रबंधन में मूल रूप से दो प्रकार के संसाधनों की मुख्य भूमिका होती है जो इस प्रकार है–

- संसाधन
- Human Resourses
- मानवीय संसाधन
- संस्था प्रमुख, शिक्षकगण, छात्र-छात्राऐं, समुदाय आदि

- Physical Resourses
- भौतिक संसाधन
- विद्यालय भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, शिक्षण अधिगम सामग्री, खेल का मैदान आदि

*** मानवीय संसाधन * -**

मानवीय संसाधनों का कुशल प्रबंधन ही किसी विद्यालय एवं शैक्षणिक व्यवस्था का मुख्य आधार होता है । उत्तम शिक्षा व्यवस्था के लिए यह आवश्यक है कि मानवीय संसाधनों का सदुपयोग किया जाए विद्यालय में प्रत्येक मानव संसाधन की योग्यता एवं क्षमता एक समान नहीं होती इसलिए उनके कार्य का विवरण भी समान रूप से नहीं किया जा सकता वरन उनकी योग्यता के अनुसार कार्य प्रदान करना ही उनकी क्षमता का सर्वाधिक उत्तम उपयोग है।

प्रोफेसर एस के दुबे के शब्दों में - "मानवीय संसाधन का प्रबंधन विद्यालय के सर्वांगीण विकास कि वह कला है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता क्षमता के अनुसार कार्य प्रदान कर के तथा मार्ग दर्शन कर के उन का पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाता है।" जैसे कि विद्यालय स्तर पर मानवीय संसाधन के उदाहरण निम्न है संस्था प्रमुख, शिक्षाक गण , एवं समुदाय।

*** भौतिक संसाधन * -**

विद्यालय के भौतिक संसाधनों के अंतर्गत विद्यालय भवन, पुस्तकालय , प्रयोगशाला , शिक्षण अधिगम सामग्री, खेल का मैदान, कार्यालय- विद्यालय परिसर फर्नीचर तथा खेल सामग्री आदि को सम्मिलित किया जाता है। भौतिक संसाधनों का , विद्यालय विकास एवं छात्रों के चौमुखी विकास में महत्वपूर्ण योगदान हैं । भौतिक संसाधनों के अभाव में विद्यालय में उपलब्ध मानवीय संसाधनों का उपयोग भी ठीक प्रकार से नहीं किया जा सकता इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालय के भौतिक संसाधनों का अनुरक्षण हो क्योंकि इनके अभाव में नातो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभाव शाली बनाया जा सकता है और ना ही पाठ्य सहगामी प्रक्रियाओं के माध्यम से बालकों में अंतर्निहित प्रतिभाओं का विकास किया जा सकता है।

नई शिक्षा नीति 2020, 5.9 के अनुसार," स्कूलों में सभ्य और सुखद कार्य स्थिति सुनिश्चित करने के लिए स्कूलों में पर्याप्त और सुरक्षित भौतिक संसाधन, शौचालय, स्वच्छ पेयजल, सीखने के लिए स्वच्छ और आकर्षक स्थान, बिजली, कंप्यूटर उपकरण, इंटरनेट, पुस्तकालय और खेल और मनोरंजन के साधन मुहैया करवाने होंगे ताकि स्कूल के शिक्षक और छात्र, सभी जेंडर के छात्रों और दिव्यांग बच्चों सहित एक सुरक्षित समावेशी और प्रभावी शिक्षण वातावरण प्राप्त कर सके और स्कूलों में पढ़ने और सीखने के लिए सुविधा जनक और प्रेरित वातावरण प्राप्त कर सकें।"

चर्चा हेतु प्रश्न -

प्रश्न 1- क्या केवल संसाधनों से छात्रों का पूर्ण विकास किया जा सकता है ?

हां या नहीं।

प्रश्न 2 – क्या संसाधनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी केवल छात्रों की है ?

हां या नहीं।

प्रश्न 3 – क्या विद्यालय के उचित क्रियान्वयन के लिए संसाधन आवश्यक है ?

हां या नहीं।

कोरबा जिले के विकासखंड कटघोरा में शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय रंजना स्थित है । जो सीमित भौतिक संसाधनों में कार्य कर रहा था । पूर्व में विद्यालय भवन, उचित बैठक व्यवस्था , खेल का मैदान, शिक्षकों की कमी, तकनीकी शिक्षा एवं समुदाय की सहभागिता का अभाव था किंतु संस्था प्रमुख शिक्षक शिक्षिकाओं एवं समुदाय के कुशल प्रबंधन और सहयोग से विद्यालय की रूप रेखा में अविश्वसनीय परिवर्तन आया जिसकी केस स्टडी प्रस्तुत है-

<u>केस स्टडी-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय रंजना, जिला कोरबा छत्तीसगढ़</u>

Charle Evans Hughes ने कहा है कि मैं काम, कड़ी मेहनत और लंबे समय तक काम करने में यकीन करता हूं. इंसान अधिक काम करने से नहीं टूटता बल्कि चिंता और असंयम से टूटता है. यह कथन श्री रामनारायण सिंह जगत पर बखूबी लागू होता है |

शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय रंजना की स्थापना सन 1974 में हुआ था, स्थापना काल में यह विद्यालय मध्य प्रदेश राज्य के बिलासपुर संभाग एवं बिलासपुर जिला अंतर्गत कटघोरा विकासखंड में आता था वर्तमान में यह विद्यालय कटघोरा विकासखंड जिला कोरबा छत्तीसगढ़ के अधीन हैआपका विद्यालय कोरबा जिला मुख्यालय से सड़क मार्ग से दीपका होते हुए जिला मुख्यालय के दक्षिण पश्चिम दिशा में दीपका से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है राष्ट्रीय राजमार्ग कटघोरा बिलासपुर की बीच स्थित चैतमा ग्राम से भी विद्यालय पहुंचा जा सकता है, इस मार्ग से जाने पर जिला मुख्यालय कोरबा से कटघोरा होते हुए चैतमा ग्राम से पूर्व दिशा में लगभग 45 किलोमीटर दूरी पर है। पूर्व में यह विद्यालय चैतमा दीपका मार्ग के बीच में स्थित रंजना ग्राम के हृदय स्थल पर ग्राम पंचायत भवन रंजना एवं साप्ताहिक बाजार के पास स्थित था। जो सन् **2006-07** रंजना के ऐतिहासिक हेलीपैड खेल मैदान जहां हमारे देश के पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी का आगमन सन् **1984** में सपरिवार हुआ था, के पास अवस्थित है । शाला भवन चारों तरफ से बाउंड्रीवॉल से सुरक्षित है।

शाला ग्राम रंजना जो ग्राम पंचायत मुख्यालय भी है, यहां की आबादी लगभग 4500 है, ग्राम पंचायत रंजना अंतर्गत 6 प्राथमिक शालाएँ स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा संचालित एवं एक अशासकीय प्राथमिक शाला है जहां से बच्चे पांचवी कक्षा उत्तीर्ण करने उपरांत आपके शाला में दाखिला लेते हैं। प्रतिवर्ष आपके विद्यालय की दर्ज संख्या 300 के लगभग रहती है। वर्तमान में शाला में प्रधान पाठक के अलावा 7 शिक्षक – शिक्षिकाएं कार्यरत हैं।

वर्तमान सत्र 2022-23 में विद्यालय में विद्यार्थियों की दर्ज संख्या 283 है। प्रत्येक कक्षा 2-2 सेक्शन में अलग-अलग कक्षा में संचालित की जाती है। शासनकी योजना अनुसार बच्चों को निःशुल्क शिक्षा,निःशुल्क गणवेश निःशुल्क पाठ्यपुस्तक, चिरायुयोजना अंतर्गत नियमित स्वास्थ्य परीक्षण,निःशुल्क मध्यान्हभोजन जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं साथ ही साथ बच्चों को राज्य छात्र वृत्ति भी प्रदान किया जाता है शाला में बुनियादी संसाधन भवन, शिक्षक,प्रधान पाठक,कार्यालय, शौचालय पेयजल, विद्युत व्यवस्था आदि की सुविधाऐ उपलब्ध है।

श्री रामनारायण सिंह जगत की पदस्थापना शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला रंजना में सन् 2010-11 में हुई, उस समय इनको सीमित भौतिक संसाधन में कार्य करने का अवसर मिला, एक मात्र भवन जिसमें 3 शिक्षण कक्ष एवं एक छोटा सा केबिन नुमा प्रधान पाठक कक्ष जहां बड़ी मुश्किल से स्टाफ के शिक्षक एवं प्रधान पाठक के बैठने की व्यवस्था हो पाती थी ।शाला की दर्श संख्या उस समय लगभग 200- 220 रहती थी जिन्हें पढ़ाने के लिए संस्था में आपके साथ श्री चमरा राम कैवर्त शिक्षक पंचायत रहे जो आज भी आपके साथ कार्य कर रहे हैं। पढ़ाने के अलावा संस्था का अभिलेख संधारण डाक आदान-प्रदान से लेकर सभी कार्य का निष्पादन आप दोनों को ही करना पड़ता था। सुबह सामूहिक प्रार्थना से संध्या छुट्टी होने तक का समय कैसे गुजर जाता था पता ही नहीं चलता था, बच्चों की छुट्टी होने के बाद भी आप दोनों घंटा दो घंटा बैठकर कार्य करते थे बाद में श्री राजेंद्र कुमार उईके विज्ञान सहायक को आपके विद्यालय में अध्यापन कार्य करने हेतु आदेशित किया गया साथ में श्री सुमेर सिंह

पैकरा छात्रावास अधीक्षक एवं श्री संदीप गुप्ता व्यायाम अनुदेशक के द्वारा एक दो कालखंड अध्यापन कार्य किया जाता था। शाला विकास की कोई योजना पूर्व में नहीं थी।

शाला प्रबंधन समिति का गठन पूर्व में भी किया गयाथा लेकिन पता नहीं क्यों उन्होंने शाला में किसी तरह से सहयोग देने से इंकार करते हुए लिखित में साफ तौर पर दे दिया था । श्री रामनारायण सिंह और श्री कैवर्त सर दोनों ने शाला की स्तर सुधार के विचार से योजना बनाकर कार्य करना प्रारंभ किया । बच्चों के अभिभावकों एवं गणमान्य नागरिकों से निवेदन कर शाला विकास हेतु नवीन जनभागी दारी विकास समिति का गठन किया और बैठने हेतु फर्नीचर की सुविधा नहीं होने के कारण उनके बैठने हेतु दरी चटाई की व्यवस्था की गई थी । शिक्षकों विद्यार्थियों की बैठने की व्यवस्था से लेकर शाला के वातावरण को आकर्षित एवं विद्यार्थियों के अनुकूल बनाने की दिशा में लगन एवं कड़ी मेहनत के साथ उत्साह पूर्वक कार्य करना प्रारंभ किया गया । आपने जन भागीदारी और विकास समिति को विश्वास में लेकर सहयोग से विद्यालय परिसर को हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से बांस एवं लकड़ी से घेरा बनवाया और पहलीबार शाला भवन के आस पास पौधारोपण कार्य क्रम के तहत छाया दार एवं फूलदार पौधों को लगवाया, पहले ही वर्ष में आपके द्वारा किए गए कार्य की मेहनत रंग लाई और शाला भवन के चारों ओर विरान रहने वाले शाला पर हरियाली दिखाई देने लगी। 2 साल बाद तत्कालीन सरपंच एवं समिति के अध्यक्ष श्री परमानंद मरकाम और आपके द्वारा बाउंड्री वाल का प्रस्ताव बना कर शासन को भेजा गया, जिसे स्वीकृति मिली और इस तरह बाउंड्रीवाल का तोहफा आपके विद्यालय को मिला जो वरदान साबित हुआ।

विद्यालय का मुख्य द्वार एवं किचन गार्डन का दृश्य

शाला परिसर के अंदर एवं बाहर बच्चों के खेल कूद हेतु खेल मैदान उपलब्ध है जिसकी मरम्मत की आवश्यकता थी । शाला प्रबंधन समिति के पहल एवं आपके प्रयास से परिसर के अंदर खेल मैदान का समतलीकरण ग्राम पंचायत सरपंच द्वारा किया गया।बच्चों की लंबी अनुपस्थिति का निदान भी आपके तथा जन भागीदारी के सहयोग से सफल रहा । आपके अथक प्रयास और सहयोग से बच्चों की उपस्थिति प्रतिदिन बढ़ती गई। मई 2017 में जिला स्तरीय समस्या निवारण शिविर के दौरान अनुविभागीय अधिकारी कटघोरा के द्वारा शाला निरीक्षण के दौरान श्री रामनारायण सिंह जगत के प्रयास से शाला विकास हेतु किए जा रहे कार्यों से प्रशंसाव्यक्त करते हुए खेल मैदान एवं वर्तमान में विकसित किए जा रहे बगीचों के दक्षिण में बड़े ढलान एवं गड्ढे को उनके निर्देश पर ताप विद्युत परियोजना सलीहा पारा प्रबंधन द्वारा राखड़ डालकर समतल कर सहयोग प्रदान किया गया। जिले में कार्यरत रहे पूर्व कलेक्टर श्रीमती रीना बाबा साहेब कंगाले, श्री पीदयानंद, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत कोरबा श्री संदीप नविलास पुष्कर जी के द्वारा शाला निरीक्षण किया गया तथा शाला व्यवस्था पर प्रशंसा व्यक्त किया गया।

शिक्षा व्यवस्था से लेकर भवन सुविधा एवं अन्य प्रकार की समस्याओं को शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से मिलकर सुलझाते गए ।पुनीत पावन कार्य में प्रारंभ से ही आप और आपके साथी कैवर्त जी कंधे से कंधा मिलाकर आपके साथ खड़े रहे। शासन के द्वारा शाला में शिक्षक धीरे-धीरेआते गए और 7

शिक्षकों की पदस्थापना विद्यालय में विभाग के उच्चाधिकारियों की कृपा दृष्टि एवं शाला प्रबंधन समिति के अथक प्रयास से संभव हो सका I शाला प्रबंधन समिति एवं बालकों के निरंतर सहभागिता एवं सहयोग से आपका विद्यालय सतत विकास पथ पर बढ़ने लगा और जिस रूप में निखर कर आज सामने आया है, आपने अपने विद्यालय की छवि को उल्लेखित करते हुए कहाकि-अपार खुशी एवं

आत्मानुभूति हो रही है जिनको मैं वाणी से व्यक्त कर पाने में असमर्थ महसूस कर रहा हूं " अकेला चला था मंजिल की ओर लोग साथ आते गए कारवां बढ़ता गया"। शाला के समर्पण भाव से कार्य करने पर जो खुशी का अहसास आपको हुआ वह किसी पुरस्कार से कम नहीं।

शाला प्रबंधन समिति का प्रशिक्षण एवं बच्चों द्वारा क्रियाकलाप

प्रधान पाठक के दायित्व निर्वहन एवं कार्य का आपने संक्षिप्त में वर्णन बताया –

1)शाला प्रबंधन समिति को सुदृढ़ बनाना समिति के पदाधिकारियों को उन के दायित्व का बोध कराते हुए शाला के विकास कार्य से जोड़ना।

2) पालकों को शाला की विभिन्न गतिविधियों में शामिल करना।

3)माताओं को उन्मुखीकरण कार्य क्रम के माध्यम से शाला में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करना एवं सुझाव प्राप्त कर शिक्षा गुणवत्ता सुधार की दिशा में कार्य करना।

4) समुदाय सहभागिता के तहत पालक शिक्षक संग्रह कोष की स्थापना करना तथा संग्रह राशि का उपयोग, शाला विकास कार्यों में शाला प्रबंधन समिति के अनुमोदन से करना। संग्रह राशि से पेयजल शौचालय तक पानी सप्लाई, सबमर्सिबल पंप आदि की व्यवस्था की गई है।

5) शाला प्रबंधन समिति का नियमित बैठक आयोजन कर शाला विकास एवं शिक्षा गुणवत्ता सुधार के लिए कार्य करना।

6) सामुदायिक सहभागिता से शाला के खेल मैदान का समतली करण कराना।

7) बच्चों की नियमित उपस्थिति हेतु पालक संपर्क तथा पालक को एवं माताओं की बैठक कराना शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से बच्चों को शाला तक लाने का प्रयास कराना।

8) पंचायत प्रतिनिधित्व क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व से शाला विकास एवं शिक्षागुण वत्ता सुधार में सहयोग प्राप्त करना शाला त्यागी बच्चों को शाला तक लाने का प्रयास करना।

10) शाला के वातावरण को रोचक बनाने की दिशा में सतत प्रयास करना।

11) शालाके बच्चों को योगाभ्यास कराना।

12) पर्यावरण की दृष्टि से विद्यालय परिसर को हरा-भरा बनाए रखने हेतु बच्चों एवं शिक्षकों को प्रेरित करते हुए वृहद पौधारोपण कराना । बच्चों के जन्मदिन पर शाला परिसर में पौधा रोपण कराना।

विद्यालय में योगा-अभ्यास करते हुए छात्र-छात्राएं

चिंतन हेतु प्रश्न -

प्रश्न 1 विद्यालय संसाधनों के विकास में संस्था प्रमुख कौन-कौन से अवसर निर्मित कर सकते हैं?

प्रश्न 2 विद्यालय के संसाधन बालकों के अधिगम का स्तर बढ़ाने में किस प्रकार सहायक हैं?

प्रश्न 3 संसाधनों के विकास में वह कौन से कारक होते हैं जो बाधक हो सकते हैं जिन्हें कुशल नेतृत्व से दूर किया जा सकता है?

प्रश्न 4 विद्यालय में संसाधनों का संरक्षण क्यों आवश्यक है ?

प्रश्न 5 आपके विद्यालय में अधिगम का स्तर बढ़ाने के लिए कौन-कौन से बुनियादी ढांचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध है?

प्रश्न 6 समावेशी शिक्षा हेतु दिव्यांग छात्रों के लिए कौन-कौन से विशेष संसाधनों की आवश्यकता पड़ सकती है?

सारांश

विद्यालय परिस्थितियों में संस्था प्रमुख एक मुखिया की भूमिका अदा करता है विद्यालय में प्रधान की हैसियत से वह उन सभी कार्यों को संपादित करता है जो आवश्यक हैं जैसे योजना बनाता है संसाधनों की व्यवस्था करता है कार्यों का विभाजन करता है मूल्यांकन करता है संपर्क स्थापित करता है आदि एक नेता के रूप में उसे अनेक कार्य करने होते हैं तभी तो उसे जहाज के कप्तान के समान या मुख्य चक्र के समान माना जाता है। उसके नेतृत्व की छाप विद्यालय की हर क्रिया पर पड़ती है इसीलिए कहा जाता है कि जैसा संस्था प्रमुख होगा वैसा ही विद्यालय होगा । विद्यालय के वातावरण से ही संस्था प्रमुख की छवि प्रतिबिंबित होती है अतः संस्था प्रमुख में मुखिया बनने के गुणों का होना ना केवल अपरिहार्य ही है अपितु वांछनीय भी है।

मुखिया नातो जन्म जात ही होते हैं और ना पूरी तरह परिस्थितियों के कारण बनते हैं। मुखिया जन्मजात गुणों तथा परिस्थितियों की परस्पर अंतः क्रियाओं का परिणाम होता है। मुखिया जब जन्म जात नहीं होता है तो इसका आशय यह है कि मुखिया में नेतृत्व के गुणों का विकास किया जा सकता है। इस हेतु संस्था प्रमुख में ऐसी क्षमताएं विकसित की जाएं जिसके आधार पर वह विद्यालय के लिए पर्याप्त भौतिक एवं माननीय संसाधन की आवश्यकताओं को पहचान कर उन्हें विद्यालय में स्थापित कर सके।

संसाधनों के संबंध में हुए नए शोध कार्यों तथा परिणामों की जानकारी भी संस्था प्रमुख को दीजाए जिससे इन कार्यों के परिणामों के परिपेक्ष्य में अपनी प्रशासनिक शैली में वांछित सुधार ला सके। विद्यालय की स्थिति एवं स्तर का मात्रात्मक एवं गुणात्मक मूल्यांकन,विभिन्न मूल्यांकन अंकों एवं श्रेणियों के योग से विदित नहीं हो सकता। यह संभव है कि विद्यालय भौतिक संसाधनों की दृष्टि से बहुत समृद्ध हो परंतु उसका शैक्षिक पक्ष बहुत निर्बल हो। इसी प्रकार किसी विद्यालय में भौतिक संसाधन अपर्याप्त होते हुए भी उसका शैक्षिक स्तर बहुत अच्छा हो सकता है। सब पक्षों के मूल्यांकन

परिणामों को अलग रखना अधिक उपयोगी एवं सहायक है। लक्ष्य और साधनों को मिलाना शैक्षिक दृष्टि से आपत्तिजनक होगा।यह संभव है कि भौतिक संसाधन रूपी पक्ष का एक वर्ग और मानवीय संसाधन रूपी पक्ष का दूसरा वर्ग बनाकर उनका प्रबंधन एवं मूल्यांकन-परिणामों को दो वर्गों के रूप में जोड़कर प्रस्तुत किया जाए। वास्तव में सब पक्षों को अलग-अलग रखने से विद्यालय का चित्र अधिक स्पष्ट रूप में प्राप्त होता है।

विद्यालय संसाधन के विकास संबंधित कुछ वीडियो लिंक प्रस्तुत है

1. https://youtu.be/4KpHzRLg9mY
2. https://youtu.be/L6MFNXJIP7U

संदर्भ-

1. नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार |

2.शैक्षिक प्रबंधन एवं विद्यालय संगठन–डॉ राजेश वर्मा,डॉ सरोज सक्सेना,प्रकाशक - इंडियन पब्लिशिंग हाउस जयपुर |

3.शैक्षिक प्रबंधन एवं विद्यालय संगठन- सुरेश कुमार प्रजापति, प्रकाशक – गोयल पब्लिकेशंस,जयपुर|

4. गूगल